१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

1 अपने साथ ऐसा न होने दें।

2 कल्पित या झूठी कथाएं सच के रूप में सरलता से ग्रहण कर ली जाती हैं यदि वे अधिक समय तक हमारे आसपास हों। मकड़ी का ही उदाहरण ले लीजिए। लगभग ३५० ईसा पूर्व युनानी दर्शनशास्त्री अरस्तु ने एक मकड़ी का वर्गीकरण किया कि उसके छः पैर होते हैं। और अगली २० शताब्दियों तक लोग यही विश्वास करते रहे। किसी ने पैरों को गिनने की परवाह तक नहीं की। आखिर महान अरस्तु को कौन चुनौती देता? आगे जाकर लेमार्क, जो जीव वैज्ञानिक और प्रकृति के ज्ञाता थे उन्होंने इसकी खोज की। उन्होंने ध्यानपूर्वक मकड़ी के पैरों को गिना। और अन्दाजा लगाइए कि उसके कितने पैर गिने एकदम आठ! वह कल्पित कथा जो सच की तरह सदियों से सिखाई गई थी वह नष्ट हो गई क्योंकि लेमार्क ने गिनने का कष्ट किया।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

3

क्या यह सम्भव है कि मसीही कलीसिया के अन्दर धार्मिक कल्पित कथा घुस आयी हो? क्या यह सम्भव है कि हम छः या आठ पैरों वाली मकड़ी से अधिक महत्वपूर्ण विषय का अध्ययन कर रहे हैं?

लाखों लोग सप्ताह के पहले दिन आराधना करते हैं यह विश्वास कर कि यह बाईबिल का सब्त है। अपने पिछले सत्र में हमने खोज की थी कि सप्ताह का सातवां दिन, शनिवार, परमेश्वर का सच्चा सब्त है। जिस प्रकार से २००० साल से पाठ्य -पुस्तकें गलत सिखाती आ रही हैं कि मकड़ी के छः पैर होते हैं, इसी प्रकार हजारों लोगों ने सब्त के झूठ को ग्रहण किया है। आप बाईबिल की इन सभाओं में लगातार इसलिए आ रहे हैं क्योंकि आप का हृदय इस सच्चाई को जानने का इच्छुक है। आप जानना चाहते हैं कि वास्तव में परमेश्वर का वचन क्या कहते हैं आप इस बात में दिलचस्पी नहीं लेते कि धार्मिक नेतागण क्या सिखाते हैं। आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर क्या कहता हैं। आइए हम अपने पिछले सत्र में खोज की गई बातों को दोहराएँ।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

4

(दृश्य)

हमने सीखा कि परमेशवर ने हमें प्रत्येक सप्ताह एक विशेष दिन दिया है -सब्त का दिन जिसमें हम उसकी आराधना करते हैं और अपने सृष्टिकर्त्ता के रूप में उसके कार्य को स्मरण करते हैं। हमने सीखा कि सब्त का दिन कोई भी दिन नहीं है। परन्तु वह सप्ताह का सातवां दिन है और हमने सीखा कि सब्त को हम तब भी मानते रहेंगे जब इस दुनिया का अन्त हो जाएगा और जब हम लोग स्वर्ग में अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ रहेंगे।

5

परन्तु जब हम अपनी दुनिया के चारों ओर देखते हैं तब हम यह पाते हैं कि अधिकतर लोग सातवें दिन परमेश्वर की आराधना नहीं करते।

6

यहाँ तक कि बहुत -से लोग बाईबिल के परमेश्वर की आराधना नहीं करते, परन्तु दूसरे ईश्वरों की आराधना करते हैं।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

7

परन्तु वे जो बाईबिल के परमेश्वर की आराधना करते हैं, उनमें से भी बहुत लोग उसके पवित्र दिन को छोड़कर किसी और दिन में आराधना करते हैं। ऐसा क्यों? क्या परमेश्वर ने इस दिन को बदला? क्या किसी और ने बदला?

बहुत से लोग क्यों दूसरे दिन -रविवार -को सब्त की तरह मानते हैं?

8

हमने सीखा कि बाईबिल हमें बताती है कि परमेश्वर ने अपने नियम में एक बहुत ही विशेष चिन्ह हम पृथ्वी पर रहने वालों को दिया था:

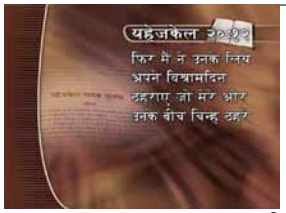

9

(मूलपाठ : यहेजकेल २० : १२, २०)

"फिर मैं ने उनके लिये अपने विश्रामदिन ठहराए जो मेरे और उनके बीच चिन्ह ठहरें,

10

कि वे जानें कि मैं यहोवा उनका पवित्र करने वाला हूँ ---"

11

"मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानो कि वे मेरे और तुम्हारे बीच चिन्ह ठहरें,

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

12

कि जिससे तुम जानो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

यहेजकेल २० : १२, २०

13

(दृश्य)

बाइबिल आरंभ से अन्त तक, सच्ची गवाही देती है कि परमेश्वर ने ही सब्त के दिन को बनाया है और यह सब्त सप्ताह का सातवां दिन है बाइबिल में ऐसा कोई भी स्थान नहीं है जहाँ परमेश्वर ने यह बताया है कि उसने अराधना और विश्राम के इस दिन को बदला है वह चिन्ह जो उसके और उसके लोगों के बीच है।

14

(दृश्य)

आइए हम परमेश्वर के वचन के अध्ययन के द्वारा एक क्षण के लिए दोहराए कि इन संदेशों में हमने क्या प्राप्त किया है।

जब परमेश्वर ने पृथ्वी ग्रह और मनुष्य को बनाना समाप्त किया तब उसने सब्त को बनाया।

15

प्रथम सप्ताह के उस सातवें दिन में और पूरी पृथ्वी के इतिहास में उसकी सृष्टि की रचना की एक स्मृति।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

16 जब परमेश्वर ने सीनै पहाड़ पर अपने नियम लिखे, तो उसने सब्त के नियम को उन नियमों के एकदम बीच में अर्थात हृदय के पास रखा।

17 (दृश्य)
यह नियम मनुष्य को हमेशा याद दिलाने के लिए था कि वह केवल ही अस्तित्व में नहीं आया।

18 वह सातवें दिन को मानने के लिए मनुष्य को देता है क्योंकि उसने छः दिनों में पृथ्वी की सृष्टि की

19 और सातवें दिन विश्राम किया। अपने नियमों के संबंध में परमेश्वर ने मूसा के द्वारा लोगों को कहा कि उन नियमों में से न तो कुछ निकाले न ही उनमें कुछ बढ़ाए।

20 (मूलपाठ : व्यवस्थाविवरण ४ : २)
"जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उस में न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना,

21 तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की जो -जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूँ उन्हें तुम मानना।" व्यवस्थाविवरण ४ : २। परमेश्वर ने भी उनसे कहा,

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

22

(मूलपाठ : भजनसंहिता ८९ : ३४)

"मैं अपनी वाचा न तोड़ूंगा, और जो मेरे मुंह से निकल चुका है, उसे न बदलूंगा।"

भजनसंहिता ८९ : ३४

23

स्वयं यीशु ने सीनै पर्वत पर दी गई व्यवस्था का पालन करने का संकल्प दिखाया। उसने पहाड़ी उपदेश में व्यवस्था को मिटाने नहीं परन्तु उन्हें पूरा करने आया है!

24

(मूलपाठ : मत्ती ५ : १७ -१९)

उसके शब्दों पर ध्यान दीजिए : –

"यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ। मैं लोप करने नहीं परन्तु पूरा करने आया हूँ।"

25

क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं,

26

तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

27

इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े और वैसा ही लोगों को सिखाए,

28

वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा ----"

मत्ती ५ : १७ -१९

जब परमेश्वर ने अपने लोगों को दस आज्ञाएं दे दीं, तो उसने यह भी साफ कर दिया कि कोई भी मनुष्य प्राणी उसके पवित्र होठों से निकले निर्देश को नहीं बदलेगा।

29

स्वयं यीशु ने अपने उदाहरण से यह दिखाया कि वह उस दिन का आदर करना चाहता था जिसे उसने और उसके पिता ने इस पृथ्वी के इतिहास के पहले सप्ताह में पवित्र बनाया।

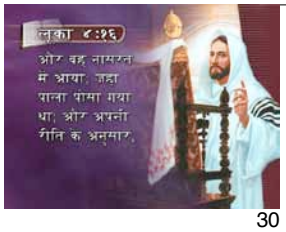

30

(मूलपाठ : लूका ४ : १६)

"और वह नासरत में आया; जहां पाला पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार,

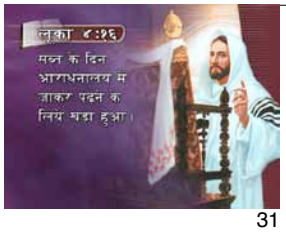

31

सब्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ।"

लूका ४ : १६

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

32

जब धर्मी नेताओं ने यीशु के चेलों के ऊपर सब्त को तोड़ने का दोष लगाया, तब यीशु ने कहा कि वह इस दिन का भी प्रभु है।

33

(मूलपाठ : मरकुस २ : २७, २८)

"सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिए।

34

इसलिये मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है।"

मरकुस २ : २७, २८

35

न केवल यीशु सब्त के दिन का आदर करता था परन्तु वह अपने चेलों से भी कहता था कि प्रार्थना करें कि वे उसके पवित्र दिन को भविष्य में भी माना करें।

36

(मूलपाठ : मत्ती २४ : २०)

मत्ती २४ : २० में यह विनती पाते हैं : "और प्रार्थना किया करो, कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े।"

37

यहाँ यीशु यरूशलेम के नष्ट होने के ठीक पहले अपने अनुयायियों के भागने की बात कर रहे थे।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

38

इसका विनाश रोमियों द्वारा ७० ईसवी में हुआ।

39

जब उसे क्रूस पर चढ़ाया गया, उसकी आशा थी कि उसको मानने वाले सब्त का पालन करते रहेंगे।

40

कट्टरपंथी यहूदी ३,५०० वर्ष पहले हुए निर्गमन के समय से सातवें दिन में उपासना करते रहे हैं। संसार में कहीं भी हों, वे सप्ताह के सातवें दिन को परमेश्वर का दिया हुआ सब्त मानते हैं।

41

यदि केवल बाइबिल ही हमारी सूचना का आधार होती, तो हम फिर भी यह निश्चित कर पाते कि कौन -सा सातवां दिन या सब्त है। क्रूस - काण्ड के वर्णन पर ध्यान दें तो लूका की पुस्तक सप्ताह के अन्त की घटनाओं का सारांश बताती है। शुक्रवार को यीशु की क्रूस की मृत्यु के बाद की बाइबिल वर्णन करती है :

42

(मूलपाठ : लूका २३ : ५४ - ५६; २४ : १)
"वह तैयारी का दिन था और सब्त का दिन आरम्भ होने पर था।"

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

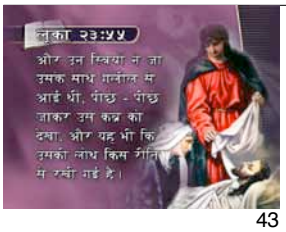

43

और उन स्त्रियों ने जो उसके साथ गलील से आई थीं, पीछे -पीछे जाकर उस कब्र को देखा, और यह भी कि उसकी लोथ किस रीति से रखी गई है।

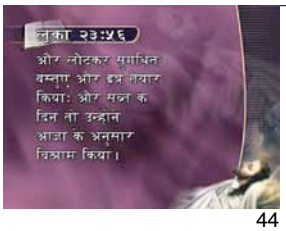

44

और लौटकर सुगंधित वस्तुएं और इत्र तैयार किया : और सब्त के दिन तो उन्होंने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया।

45

"अब सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर को, वे और उनके साथ दूसरी स्त्रियां थीं,

46

वे उन सुगंधित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थीं, लेकर कब्र पर आईं।"

लूका २३ : ५४ - ५६, २४ : १

47

लगभग पूरी मसीही दुनिया, मसीह की मृत्यु के स्मरण में गुड फ़ाईडे मनाती हैं।

मसीह के जी उठने के स्मरण में ईस्टर - रविवार मनाती हैं।

48

बाइबिल हमें बताती हैं, "आज्ञा के अनुसार" इन दो दिनों के बीच का दिन सब्त है।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

49

(दृश्य)

यधपि लूका ने ये बातें कूस के बहुत सालों बाद लिखी थी फिर भी उसने रविवार को "सप्ताह का पहला दिन" बतलाया है। उसने फिर भी सातवें -दिन को "सब्त" कहा। बाइबिल इन दो दिनों को स्पष्ट रूप से पृथक करती है।

50

सचमुच, प्रेरित कूस के बहुत वर्ष बाद तक सब्त के दिन उपासना और प्रचार करते रहे।

51

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १३ : १४, ४२, ४४)

बाइबिल बताती है कि पौलुस और उसके साथी जब अन्ताकिया गये वे

".....सब्त के दिन आराधनालय गये और बैठे।"

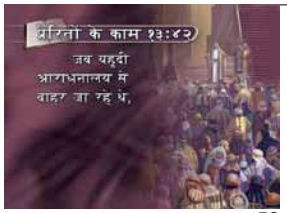

52

(प्रेरितों के काम १३ : १४)

".....जब यहूदी आराधनालय से बाहर जा रहे थे,

53

अन्य जाति के लोग विनती करने लगे कि अगले सब्त के दिन हमें ये बातें सुनाई जायें।"

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

54

"अगले सब्त के दिन नगर के प्रायः सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को इकट्ठे हो गए।"

प्रेरितों के काम १३ : ४२, ४४

यह पौलुस की रीति थी कि सब्त के दिन आराधनालय में उपासना करे:

55

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १८ : ४)

"और वह हर एक सब्त के दिन आराधनालय में वाद -विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था।"

प्रेरितों के काम १८ : ४

इन बाइबिल -संबंधी सच्चाईयों से देखा जा सकता है कि कोई प्रमाण नहीं कि यीशु या उसके चेलों ने उपासना का दिन बदल दिया हो। बदलाहट की आज्ञा का बाइबिल में ऐसा कोई प्रमाण नहीं है।

56

नये-नियम के किसी भी लेखक ने सब्त के किसी परिवर्तन के बारे में नहीं कहा! यदि ऐसा महवपूर्ण परिवर्तन घटित होता तो बाइबिल के नये नियम की पुस्तकों का यह प्रमुख विषय होता!

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

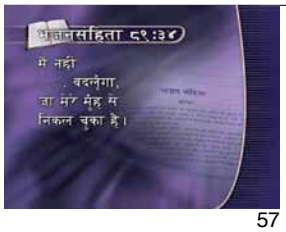

57

(मूलपाठ : भजनसंहिता ८९ : ३४)

परमेश्वर ने कहा, "मैं नहीं ..... बदलूँगा, जो मेरे मुँह से निकल चुका है।"

भजनसंहिता ८९ : ३४

परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था को नहीं बदला है और न ही किसी को अधिकार है कि परमेश्वर की व्यवस्था को बदले!

बहुत से रविवार -पालन करने वाले विद्वान इसे स्वीकार करते हैं।

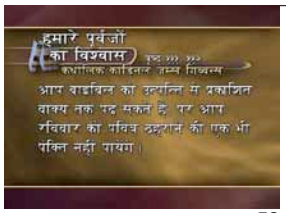

58

केथोलिक कार्डिनल जेम्स गेब्बन्स ने लिखा : "आप बाइबिल को उत्पत्ति से प्रकाशित वाक्य तक पढ़ सकते हैं, पर आप रविवार को पवित्र ठहराने की एक भी पंक्ति नहीं पायेंगे।

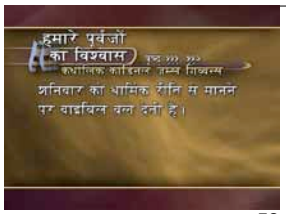

59

शनिवार को धार्मिक रीति से मानने पर बाइबिल बल देती है।"

द फेथ आफ आवर फादरस्, पृष्ठ १११, ११२

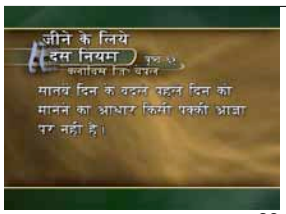

60

क्लोविस जि॰ चेपल, एक मेथोडिस्ट, यही विचार रखते हैं, "सातवें दिन के बदले पहले दिन को मानने का आधार किसी पक्की आज्ञा पर नहीं है।"

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

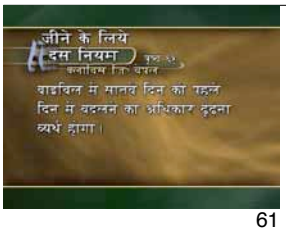

61

"बाइबिल में सातवें दिन को पहले दिन में बदलने का अधिकार ढूंढ़ना व्यर्थ होगा।"
जीने के लिये दस नियम। पृष्ठ ६१ ।

62

ऐसा कोई रिकार्ड बाइबिल में नहीं है कि यीशु या उसके शिष्यों ने कोई दूसरे दिन को माना या दूसरों को मानने के लिए कहा। "तब कैसे रविवार पालन आरम्भ हुआ?" आप पूछना चाहेंगे।

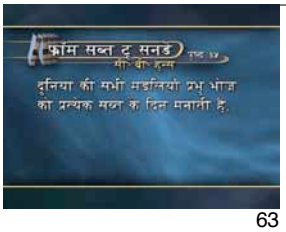

63

पाँचवी सदी के इतिहासकार विद्वान सुकरात से सीखते हैः "दुनिया की सभी मंडलियाँ प्रभु भोज को प्रत्येक सब्त के दिन मनाती हैं,

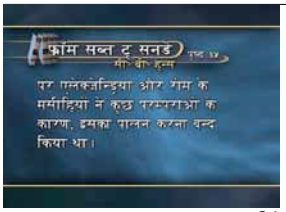

64

पर एलेक्जेन्ड्रिया और रोम के मसीहियों ने कुछ परम्पराओं के कारण, "इसका पालन करना बन्द कर दिया है।"-इक्लेज़ियास्टिकल हिस्ट्री, सी॰ बी॰ , हेन्स द्वारा उदधृत किया गया, ' फ्रॉम सब्त टू सनडे', पृष्ठ ३५ पर

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

65

दूसरे इतिहासकारों द्वारा प्रमाणित किया गया है कि मध्य -युग के समय बहुत -सी मंडलियाँ सातवें दिन के सब्त का पालन करती थीं और आधुनिक समय में दुनिया के मसीहियों द्वारा किया गया पालन अच्छा प्रमाण है।

66

इतिहासकारों के अनुसार दिनों का बदलाव ७० और १३५ ईसवी के बीच में हुआ। ये दोनों वर्ष यहूदियों के राजद्रोह के हैं जिन्हें रोमी सरकार ने बेरहमी से कुचल दिया था।

67

यहूदियों के प्रति रोम का बढ़ता क्रोध और यहूदी -मसीही तनावों के कारण यहूदियों के विरुद्ध लेख निकलने लगे और सारे रोमी साम्राज्य में यहूदी - विरोधी मत फैल गया। इसके कारण मसीहियों ने अपने आप को यहूदियों से अलग करने की चेष्टा की। चूँकि सब्त - पालन उनको यहूदियों के साथ मिलाता था इसलिए बहुत - सारे मसीही सब्त - पालन को कम महत्व देने लगे।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

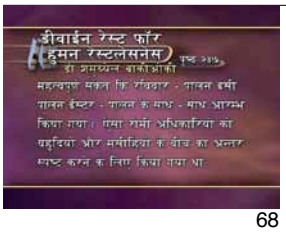

68

"महत्वपूर्ण संकेत कि रविवार - पालन इसी पालन ईस्टर - पालन के साथ - साथ आरम्भ किया गया। ऐसा रोमी अधिकारियों को यहूदियों और मसीहियों के बीच का अन्तर स्पष्ट करने के लिए किया गया था,

69

मसीही भिन्नता को यहूदी -सिद्धान्त से रोमी प्राधिकारियों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया।" पृष्ठ २३७।

70

इस बात को ध्यान में रखते हुए, यह स्पष्ट हो जाता है कि रोमी साम्राज्य की राजधानी में रहने वाले मसीहियों ने स्वंय को सब्त -पालन से अलग करने में पहल की। वे उस स्थान में थे जहाँ शत्रुता सबसे अधिक थी।

71

(दृश्य)

यह बात विशेष रूप से समझ में आती है कि ये मसीही सब्त - पालन से दूर हटने लगे क्योंकि रोमी सब्त - पालन को तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे। रोम की कलीसिया में अधिकतर अन्य जातियों से आए लोग थे जो मूर्ति - पूजा से निकल कर आए थे।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

72

(मूलपाठ : रोमियों ११ : १३)

यह ध्यान देने की बात है कि पौलुस रोम की कलीसिया को किस प्रकार संबोधित करता है : मैं तुम अन्यजातियों से यह बातें कहता हूँ...."

रोमियो ११ : १३

73

ये मसीही, हाल ही में मूर्त्ति - पूजा से मसीही धर्म में आये थे, ये यहूदी मसीहियों की तरह सब्त - पालन करने में अपने को स्थापित नहीं कर पाये थे, जो हमेशा सब्त - पालन करते रहे थे।

74

लेकिन क्यों सप्ताह के अन्य दिनों को छोड़कर रविवार को चुना गया?

यह एक अच्छा प्रश्न है !

रोमी - साम्राज्य में मूर्त्ति - पूजक बहुत वर्षो से सूर्य की पूजा करते थे, इसलिये रविवार को सूर्य का दिन कहकर उत्सव मनाते थे।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

75

रोमी -सम्राट अपने को सूर्य -देवता का प्रतिनिधि मानते थे, पैसों और इमारतों पर सूर्य का प्रतीक -चिन्ह लगाते थे और अपनी प्रजा से उपासना की मांग करते थे। कुछ धार्मिक -गुरूओं का विश्वास है कि कलीसिया ने अन्धविश्वासियों से समझौता करने में अपना लाभ देखा। उनके कुछ रीतियों को अपनाकर कलीसिया उनका प्रवेश सरल कर देती। अपनी सारी प्रजा को एक धर्म में मिलाकर रोमी साम्राज्य की शक्ति बढ़ती।

76

कई शताब्दियों से रविवार को पवित्र -दिन के रूप में नहीं, परन्तु छुट्टी के दिन के रूप में मनाया जाता था। फिर दोनों दिन पवित्र दिन के रूप में मनाए जाने लगे।

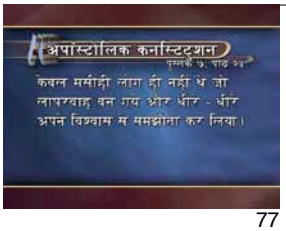

77

इसी पुस्तक के २३वें अध्याय में लिखा है : "केवल मसीही लोग ही नहीं थे जो लापरवाह बन गये और धीरे - धीरे अपने विश्वास से समझौता कर लिया।

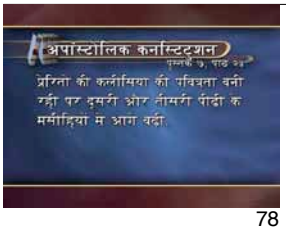

78

प्रेरितों की कलीसिया की पवित्रता बनी रही पर दूसरी और तीसरी पीढ़ी के मसीहियों में आगे बढ़ी,

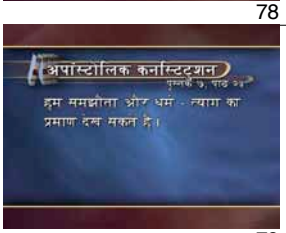

79

हम समझौता और धर्म -त्याग का प्रमाण देख सकते हैं।"

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

80

रोमी सम्राट कोन्सटेनटाइन द्वारा मार्च ७, ३२१ ईसवी को पारित प्रथम सार्वजनिक रविवारीय कानून के असर से कलीसिया में समझौते की और झुकाव आया।

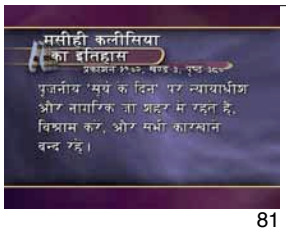

81

यधपि वह एक मूर्तिपूजक होते हुए उसने कानून बनाया :"पूजनीय 'सूर्य के दिन' पर न्यायाधीश और नागरिक जो शहर में रहते हैं, विश्राम करें, और सभी कारखाने बन्द रहें।

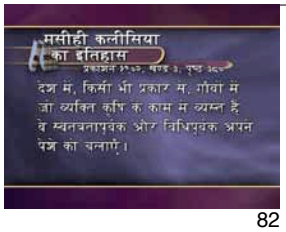

82

देश में, किसी भी प्रकार से, गाँवों में जो व्यक्ति कृषि के काम में व्यस्त हैं वे स्वतंत्रतापूर्वक और विधिपूर्वक अपने पेशे को चलाएँ।

मसीही कलीसिया का इतिहास, प्रकाशन १९०२, खण्ड़ ३ पृष्ठ ३८०

83

लौदिकिया की सभा में रोमी कलीसिया ने अगला कदम उठाकर रविवार -पालन को मसीहियत का एक भाग बना दिया। यह रविवार -पालन का प्रथम धार्मिक कानून था।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

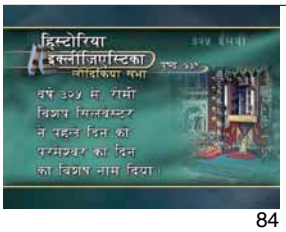

84

"वर्ष ३२५ में, रोमी बिशप सिलवेस्टर ने, पहले दिन को 'परमेश्वर का दिन' ठहरवा दिया।"

हिस्टोरिया इक्लीजिऐसटिका, पृष्ठ ७३१ ।

अन्य लोडिसिया सभा में जो ३६४ में हुई, निम्नलिखित कानून बने :

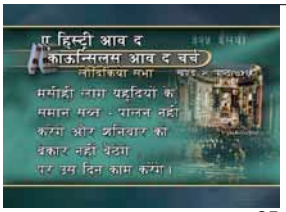

85

मसीही लोग यहूदियों के समान सब्त - पालन नहीं करेंगे और शनिवार को बेकार नहीं बैठेंगे--- पर उस दिन काम करेंगे।

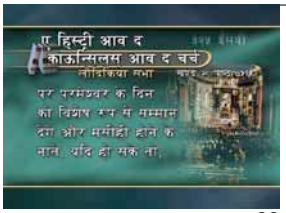

86

पर परमेश्वर के दिन को विशेष रूप से सम्मान देंगे और मसीही होने के नाते, यदि हो सके तो,

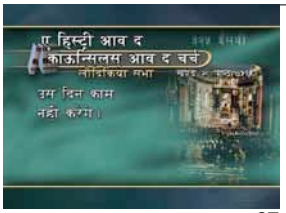

87

उस दिन काम नहीं करेंगे।"

ए हिस्ट्री आव द काऊन्सिलस् आव द चर्च, पुस्तक २, पृष्ठ ३१६

88

इतना होते हुए भी, छठी शताब्दी में भी मसीही लोग सब्त पालन कर रहे थे। जिसकी पोप ग्रेगरी ने निंदा की।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

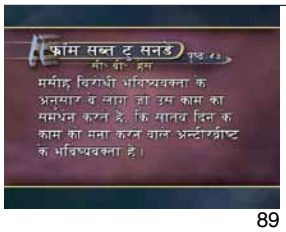

89

"मसीह विरोधी भविष्यवक्ता के अनुसार वे लोग जो उस काम का समर्थन करते हैं, कि सातवें दिन के काम को मना करने वाले अन्टीख्रीष्ट के भविष्यवक्ता हैं।" द लॉ आव सनडे, सी॰ बी॰ हेन्स की फ्राम सब्त टु सनडे में उद्घृत, पृष्ठ ४३।

90

(दृश्य)

यह ध्यान रहे कि उस समय बाइबिल सभी के पास नहीं थी, जिस प्रकार अब है। उस समय बाईबिल के सिद्धान्त मौखिक रूप से सिखाए जाते थे। कुछ समय के बाद लोग सिद्धान्त और परम्परा के बीच के अन्तर को कठिनाई से ही देख पाते थे।

91

ऐसा उस समय तक रहा जब -तक यीशु और उसके शिष्यों ने लोगों का सत्य का ज्ञान नहीं दिया। फिर शताब्दियाँ बीत गई,

92

और प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधार आन्दोलन आया, जिसने उन संस्कारों और परम्पराओं पर प्रश्न उठाए जिन्होंने परमेश्वर के वचन की शिक्षा का स्थान ले लिया था।

93

धर्मसुधार आन्दोलन की आवाज थी, "बाईबिल ही हमारे विश्वास का आधार है।"

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

94

बहुत -से विश्वासी, हस और जेरोम की तरह, अपने विश्वास के कारण जीवित जला दिए गए।

95

फिर भी, छः शताब्दियों के बाद, सब्त की सच्चाई पूरी तरह निष्क्रिय हो गयी। शताब्दी से चली आ रही परम्पराओं के नीचे छिप गयी, कुछ ही लोग ध्यानपूर्वक बाइबिल की शिक्षा को खोजते और मानते थे जो वचन सिखाता है। उन्होंने कभी यह प्रश्न नहीं उठाया कि यह सत्य है या असत्य।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

96

कभी -कभी लोग बिना प्रश्न किए विषय को स्वीकार कर लेते हैं। कई शताब्दी तक बहुत से लोगों का यह विश्वास था कि पृथ्वी इस विश्व -ब्रह्माण्ड का केन्द्र है। वे विश्वास करते थे कि सूर्य और दूसरे ग्रह पृथ्वी की परिक्रमा करते हैं। वह केवल पुरानी परम्परा को चुनौती दे रहा था। उसने प्रकट किया, पृथ्वी नहीं, सूर्य विश्व -ब्रह्माण्ड का केन्द्र हैं। क्या आप जानते हैं सबसे अधिक किसने उसका विरोध किया? कलीसिया के अगुवे -धार्मिक गुरू। वे चिल्लाये -"आप परमेश्वर के स्वर्ग को नहीं बदल सकते।" जबकि, कोपरनीकस परमेश्वर के स्वर्ग को नहीं बदल रहा था। वह केवल पुरानी परम्परा को सामने ला रहा था जिसकी वैज्ञानिक प्रमाणिकता नहीं थी। सब्त कैसे बदल गया? कोपरनीकस सच्चाई को प्रकट कर रहा था। किसी बात को लम्बे समय तक मानने से वह सच्चाई नहीं बनती। सब्त कैसे बदल गया? अचम्भे में डालने वाली बात को सुनकर कैथोलिक लेखकों की अचम्भे में डालने वाली बातों पर ध्यान दें, जिनकी कलीसिया ने सब्त को रविवार में बदलने की अगुवाई की।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

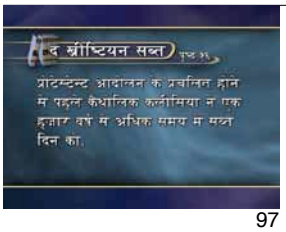

97

"प्रोटेस्टेन्ट आंदोलन के प्रचलित होने से पहले कैथोलिक कलीसिया ने एक हजार वर्ष से अधिक समय में सब्त दिन को,

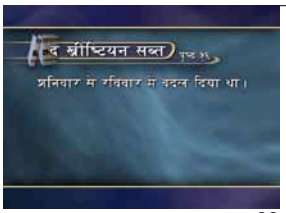

98

शनिवार से रविवार में बदल दिया था।"
द ख्रीष्टियन सब्त, पृष्ठ १६

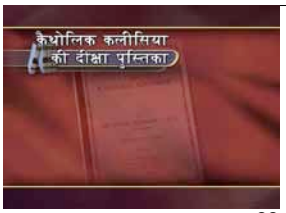

99

दीक्षा पुस्तिका में हम पढ़ते हैं:

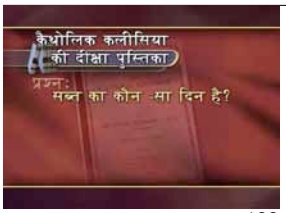

100

"प्रश्न : सब्त का दिन कौन -सा है?

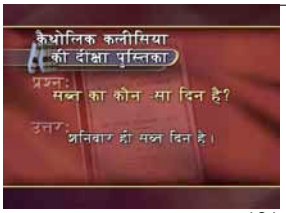

101

उत्तर : शनिवार ही सब्त दिन है।

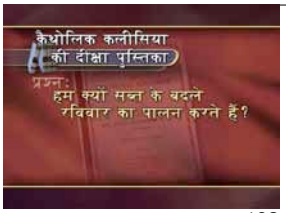

102

प्रश्न : हम क्यों सब्त के बदले रविवार का पालन करते हैं?

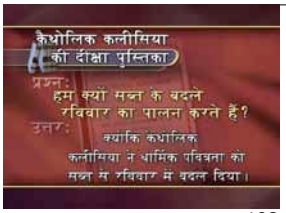

103

उत्तर : "....क्योंकि केथोलिक कलीसिया ने धार्मिक पवित्रता को सब्त से रविवार में बदल दिया।"
३३६ ईसवी में लौदिकिया सभा द्वारा यह बदला गया था।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

104

आप पूछ सकते हैं कि क्यों कैथोलिक कलीसिया ने, अपनी स्वतंत्र और खुली स्वीकृति से इस प्रथा को बदला? उत्तर है : उस अधिकार के द्वारा जो कैथोलिक कलीसिया ने परम्परा के लिए स्वीकार किया है।

105

कलीसिया के अन्दर परम्परा के अधिकार को लेकर केथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट के बीच प्रारंभिक समय में एक विशेष मतभेद था। जब मार्टिन लूथर ने यह घोषणा की कि वह केवल बाईबिल की सच्चाई को मानेगा तो ऐसा करके उसने कैथोलिक कलीसिया की कई रीतियों को चुनौती दी जो केवल परम्परा पर आधारित थीं।

106

ट्रेन्ट की सभा को यह फैसला करना था कि परम्परा और बाईबिल के साथ उसके सम्बन्ध पर कैथोलिक कलीसिया की स्थिति क्या हो। अन्त में इस प्रश्न का हल निकाला गया। सभा को फैसले पर पहुँचाने वाले भाषण का निचोड़ एच॰ एच॰ होल्टमैन के रिकार्ड से देखिए :

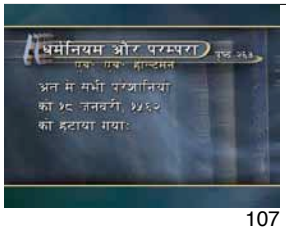

107

"अंत में सभी परेशानियों को १८ जनवरी, १५६२ को हटाया गया :

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

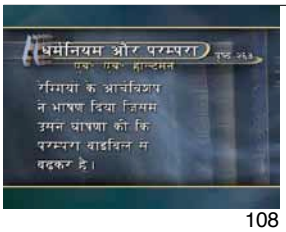

108

रेग्गियों के आर्चबिशप ने भाषण दिया जिसमें उसने घोषणा की कि परम्परा बाइबिल से बढ़कर है।"

- केनन एण्ड ट्रेडीशन, पृष्ठ २६३

इस विचार को बाईबिल प्रमाणित नहीं करती कि कलीसिया सिद्धान्त के लिये परम्परा का आधार है।

109

क्या आपको याद है कि यीशु ने अपने समय में धर्म -अगुओं से एक प्रश्न पूछा था?

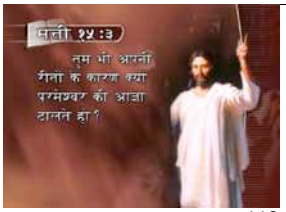

110

(मूलपाठ : मत्ती १५ : ३, ९)

उसने पूछा, "--- तुम भी अपनी रीतों के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा टालते हो?"

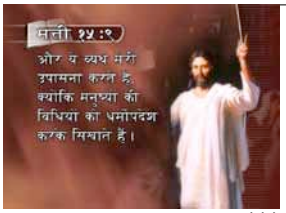

111

और उसने कहा, "और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।"

मत्ती १५ : ३,९

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

112

क्या आप वास्तविक प्रश्न को देख रहे हैं?क्या आप मसीह और बाइबिल के पीछे चलेंगे -या लोगों की परम्परा के पीछे? यह दिनों और संख्याओं की बात नहीं है। यह है स्वामियों के विषय की बात! आपका स्वामी कौन है? यीशु मसीह? या किसी संस्था की परम्पराएँ?

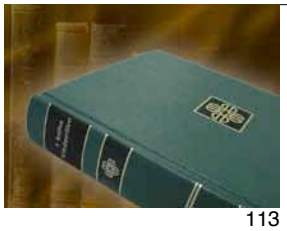
113

हमने कई विश्वस्त विद्वानों और ऐतिहासिक कार्यों को उद्धरित किया हैं। पर सब्त परिवर्तन पर कुछ आधुनिक बयान को देखिए।

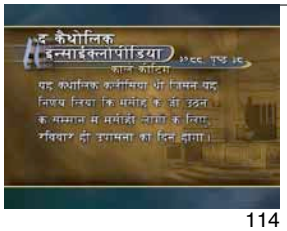

114

हम इस बयान पर ध्यान दें : "कि यह केथोलिक कलीसिया थी जिसने यह निर्णय लिया कि मसीह के जी उठने के सम्मान में। मसीही लोगों के लिए, रविवार ही उपासना का दिन होगा।"
कार्ल कीटिंग, कैथलिसिज्म और फन्डामेन्टलिज्म, १९८८, पृष्ठ ३८

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

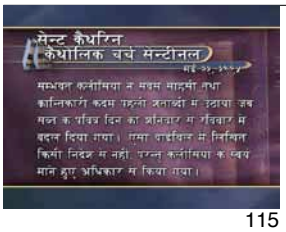

115

दूसरा बयान जो आपको रोकेगा और सोचने के लिये मजबूर करेगा, सेन्ट कैथरिन कैथोलिक कलीसिया सेन्टीनल, मई २१, १९९५, द्वारा कहा गया।"सम्भवत् कलीसिया ने सबसे साहसी तथा क्रान्तिकारी कदम पहली शताब्दी में उठाया जब सब्त के पवित्र दिन को शनिवार से रविवार में बदल दिया गया। ऐसा बाईबिल में लिखित किसी निर्देश से नहीं, परन्तु कलीसिया के स्वयं माने हुए अधिकार से किया गया,

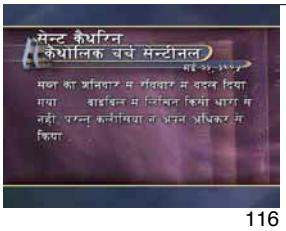

116

सब्त को शनिवार से रविवार में बदल दिया गया.....बाइबिल में लिखित किसी धारा से नहीं, परन्तु कलीसिया ने अपने अधिकर से किया.....

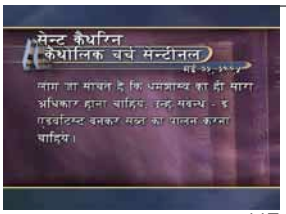

117

लोग जो सोचते हैं कि धर्मशास्त्र का ही सारा अधिकार होना चाहिये, उन्हें सेवेन्थ -डे एडवेंटिस्ट बनकर सब्त का पालन करना चाहिये।"

118

दानिय्येल ७ अध्याय की भविष्यवाणी में परमेश्वर ने दानिय्येल को प्रकट किया कि दानिय्येल ७ : २१, २५ का "छोटा सिंग" करता था....

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

119

(मूलपाठ : दानियेय्ल ७ : २५)

"समयों और व्यवस्था के बदल देने की आशा करेगा।

"कितनी सच्ची भविष्यवाणी! यहाँ पर स्पष्ट भविष्यवाणी है कि पृथ्वी की धार्मिक शक्ति परमेश्वर के नियम को बदलने की चेष्टा करेगी। दस आज्ञाओं में से केवल एक आज्ञा है जो समय की बात करती है - सब्त की आज्ञा।

120

रोमी कलीसिया ने यह करने को सोचा, पर स्वर्ग और पृथ्वी को बनाने वाला परमेश्वर आज भी वही है। अदन में जो उसने स्थापित किया उसे नहीं बदला। वास्तव में, भविष्यवाणी सभी को, सभी ओर से सृष्टिकर्त्ता की उपासना करने के लिए पुकारती है, क्योंकि वही मनुष्यों का न्याय करेगा।

121

यह भविष्यवाणी उन लोगों को तैयारी के लिये दी गई जो यीशु के साथ मिलने के लिये तैयार पाये जायेंगे जब वह बादलों में महिमा के साथ आयेगा।

122

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : १२)

"पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु मसीह पर विश्वास रखते हैं।"

प्रकाशितवाक्य १४ : १२

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

123

यीशु का विश्वास जिनके पास है, और जो हृदय से परमेश्वर को प्रेम करते हैं वे उसकी आज्ञाओं का पालन कर रहे होंगे।

124

जी हाँ, परमेश्वर हम लोगों से कहता है कि हम उसके पवित्र -दिन का पालन कर उसे सृष्टिकर्त्ता के रूप में स्मरण करें। जैसा वह कहता है वैसा करने का अर्थ है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं। जब एक व्यक्ति आदमी का बनाया हुआ सब्त -पालन करता है तो वह लोगों की परम्परा को मान रहा है। जब हम परमेश्वर की इच्छा को जान जाते हैं तो उसे पालन करने में हमें खुशी होती है। परमेश्वर लोगों की परम्परा के बारे में कुछ कहना चाहता है।

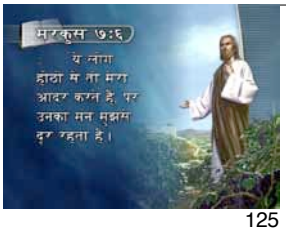

125

(मूलपाठ : मरकुस ७ : ६, ७)

".....ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझसे दूर रहता है।"

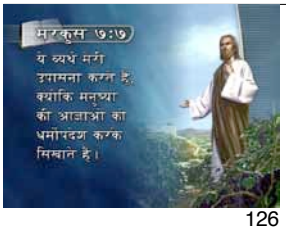

126

ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।"

मरकुस ७ : ६, ७।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

127

(मूलपाठ : मरकुस ७ : ९)

और फिर ".....तुम अपनी रीतियों को मानने के लिये परमेश्वर की आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल देते हो! "

मरकुस ७ : ९

128

(मूलपाठ : मरकुस ७ : ६)

यीशु ने कहा, "...उनका मन मुझसे दूर रहता है।"

आप देखें, यह सचमुच मन का मामला है।

यह तो प्रेम की बात है।

129

(मूलपाठ : १ यूहन्ना ५ : ३)

बाइबिल कहती है, "परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं।"

१ यूहन्ना ५ : ३

130

एक दिन यीशु जब उपदेश दे रहे थे तो उन्होंने अपने सुनने वालों से कहा कि सभी स्वर्ग नहीं जा रहे हैं।

उन्होंने कहा एक वृक्ष को उसके फल से जान सकते हो, कि वह अच्छा या बुरा है।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

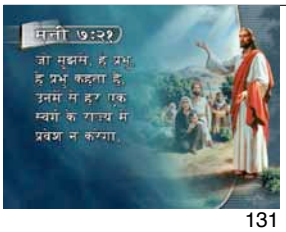

131

(मूलपाठ : मत्ती ७ : २१)

तब उसने कहा, "जो मुझसे, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है,
उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में
प्रवेश न करेगा,

132

परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।"

मत्ती ७ : २१

133

यह स्पष्ट है। उनके जीवन के फल को देख कर परमेश्वर जानता है कि उसके अपने कौन हैं। वे नहीं जो कहते हैं वे परमेश्वर के हैं, परन्तु वे जो उसके कहे को करते हैं। ऐसे लोगों का परमेश्वर के राज्य में स्वागत किया जायेगा।

134

यदि आप उससे प्रेम करते हैं, तो आप उसे अपनी जिन्दगी को चलाने देंगे जिससे उसकी इच्छा पूरी कर सकें। जब हम सब्त पालन करते हैं तब हमलोग केवल परमेश्वर की आज्ञा को नहीं मानते, पर अपने जीवन में आशीष के भागीदार बन जाते हैं।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

135

जब हम प्रत्येक सप्ताह उस विशेष दिन को बिताते हैं, तो हम अपने सृष्टिकर्त्ता को स्मरण करते हैं और, उसके पास पहुँचते हैं, तो हम लोग उसे और अधिक और अच्छी तरह जान पाते हैं। हमारा जीवन आज कल अधिक व्यस्त है। प्रायः सभी जल्दी में है। कितना अधिक काम करना है -और ये सब करने के लिये बहुत कम समय रह जाता है!

136

इन सबके बीच में जहाँ हड़बड़ी और तनाव और जल्दबाजी है, परमेश्वर हमें बुलाता है कि सप्ताह के एक दिन आराम करें। वह हमें निमंत्रण देता है कि एक दिन उसके साथ बितायें, उसकी उपासना करें उससे बातें करें, और बाईबिल द्वारा उसके वचनों को सुनें। क्या ही अच्छा मौका है -सप्ताह का एक दिन उसके साथ बितायें, उसके बारे में सोचे और उससे बातचीत करें ।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

137

मित्रों, मैं बात साफ कर देना चाहता हूँ। एक तरफ हमारे पास सच्चाई है, दूसरी तरफ परम्परा। एक तरफ हमारे पास बाइबिल है तो दूसरी तरफ लोगों की शिक्षा। एक तरफ हमारे पास परमेश्वर की आज्ञा है तो दूसरी तरफ लोगों का सिद्धान्त। एक तरफ हमारे पास सब्त है तो दूसरी तरफ रविवार। दिन की बात नहीं है -स्वामियों की बात है। यह परमेश्वर की आज्ञा पालन की बात नहीं है- यह यीशु के पीछे चलने की बात है। क्या आप लोगों की बनाई परम्परा के बदले परमेश्वर की सच्चाई पर चलना चाहते हैं? जब हम प्रार्थना करते हैं आप प्रभु यीशु को पूर्णरूप से अनुसरण करने का अपना निर्णय सुनायें।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए